पंजीयन प्रपत्र

'20वीं-21वीं शताब्दी के संस्कृत साहित्य में ललितकलाविमर्श'

द्वि-दिवसीय राष्ट्रिय संगोष्ठी
22 एवं 23 फरवरी 2019

नाम : .....

पद : .....

महाविद्यालय : .....

विश्वविद्यालय : .....

अन्य : .....

पत्राचार-पता : .....

.....

मोबाईल/ फोन नं. : .....

ई-मेल : .....

शोधपत्र का शीर्षक .....

आगमन तिथि .....प्रस्थान तिथि.....

हस्ताक्षर

पंजीयन पपत्र की छायाप्रति भी पंजीयन हेतु मान्य होगी।

संरक्षक
प्रो. (डॉ.) माण्डवी सिंह
कुलपति
इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय,
खैरागढ़ (छ.ग.)

मार्गदर्शक
प्रो. (डॉ.) आई. डी. तिवारी
अधिष्ठाता, कला संकाय एवं विभागाध्यक्ष संस्कृत

संयोजक
डॉ. पूर्णिमा केलकर
सहायक प्राध्यापिका, संस्कृत विभाग

आयोजन समिति
डॉ. देवमाईत मिंज, डॉ. मंगलानन्द झा, डॉ. योगेन्द्र चौबे,
श्री कौस्तुभ रंजन, श्री फागेश्वर साहू

सहायक
निरंजन ठाकुर (शोधार्थी)
श्रीमती लक्ष्मी श्रीवास्तव (शोधार्थी)

सम्पर्क
डॉ. पूर्णिमा केलकर : मो.नं. 9098128397
श्री फागेश्वर साहू : मो.नं. 8349412947

E-mail : seminarsnskritdiptt.2019@gmail.com

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छ.ग)
(नैक द्वारा 'ए' ग्रेड प्रत्यायित)

राष्ट्रिय संगोष्ठी
संस्कृत विभाग
'20वीं-21वीं शताब्दी के संस्कृत साहित्य में ललितकलाविमर्श'
दिनांक- 22 एवं 23 फरवरी 2019

आयोजक
संस्कृत विभाग (कला संकाय)
इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय,
खैरागढ़, राजनांदगांव (छ.ग) 491881

प्रायोजक
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नयी दिल्ली (भारत)

मान्यवर,

समग्र साहित्य जगत कलात्मक भूमि पर अभिव्यक्त होता है। वाग्देवी से सुशोभित संस्कृत-वाङ्मय प्रत्येक काल में नवनवोन्मेशशालिनी प्रज्ञा का परिचय देता रहा है। इस दृष्टि से 22 एवं 23 फरवरी 2019 को संस्कृत विभाग, इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ द्वारा द्वि-दिवसीय राष्ट्रिय संगोष्ठी आयोजित है। संगोष्ठी का विषय है- '20वीं-21वीं शताब्दी के संस्कृत साहित्य में ललितकलाविमर्श'।

संगोष्ठी के उद्देश्य -

उच्च शिक्षा शोध-दृष्टि का विकास करती है। विश्वविद्यालयीय शिक्षा प्रणाली, विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को गंभीर चिन्तन हेतु प्रेरित करती है। यह शोध-चिन्तन, विषय के नवीन ज्ञान को उपस्थित करता है। जिज्ञासु की ज्ञान-पिपासा शोध-संगोष्ठियों के माध्यम से ही शान्त हो सकती है। जिज्ञासु अध्येताओं में नवीन ज्ञानात्मक दृष्टि का विकास करना एवं शोध चिन्तन हेतु प्रवृत्त करना शोध संगोष्ठी का प्रमुख उद्देश्य है। पूर्व साहित्य की भूमि पर विचार करते हुए वर्तमान संस्कृत साहित्य एवं ललित कलाओं में अन्तरानुशासनात्मक संबंध स्थापित करना उक्त संगोष्ठी का लक्ष्य है। वस्तुतः संबंधित विषय का शोधपरक तथा प्रायोगिक चिन्तन ही प्रत्येक संगोष्ठी के मूल में रहा है। किसी विषय के विभिन्न पक्षों से संबंधित बिन्दुओं पर विद्वानों द्वारा विस्तृत चर्चा के पश्चात् निष्कर्ष उपस्थित करना ही संगोष्ठी का उद्देश्य है।

संगोष्ठी के विषय का औचित्य-

संस्कृत साहित्य की परिधि अत्यन्त विस्तृत रही है। महाकवि भास, अश्वघोष से आरंभ होकर पण्डितराज जगन्नाथ एवं अम्बिकादत्त व्यास जैसे साहित्यकारों की साहित्यिक यात्रा कलात्मक अन्तःसंबंध को व्यक्त करती है। पूर्व साहित्य की यही कलामयी धारा साम्प्रतिक साहित्यकारों जैसे पण्डिता क्षमाराव, बच्चूलाल अवस्थी, आचार्य श्रीनिवास रथ, भास्कराचार्य त्रिपाठी, आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी, अभिराज राजेन्द्र मिश्र, आचार्य रमाकान्त शुक्ल आदि की अभिनव कलात्मक लेखनी में प्रवाहित है। 20वीं, 21वीं शताब्दी की इसी अभिनव साहित्यिक धारा से कुशल अध्येताओं को परिचित करवाने हेतु उक्त विषय को संगोष्ठी के लिए निर्धारित किया गया है। वस्तुतः गायन, वादन तथा नृत्य से युक्त संगीत कला, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला तथा काव्यकला और नाट्यकला, जो काव्यकला में समाहित है ये सभी ललितकलाएं हैं। इन कलाओं का वर्तमान साहित्य से अन्तःसंबंध स्पष्ट करने हेतु उक्त विषय औचित्यपूर्ण प्रतीत होता है।

विश्वविद्यालय और संस्कृत विभाग

वर्ष 1956 में स्थापित कला,संगीत एवं साहित्य का संगम स्थल यह इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, छ.ग. राज्य के खैरागढ़ नगर में स्थित है। इस वि.वि. को एशिया महाद्वीप के सर्वप्रथम ''कला सङ्गीत विश्वविद्यालय'' का गौरव प्राप्त है। तत्कालीन राजा वीरेन्द्र बहादुर सिंह तथा रानी पद्मावती द्वारा पुत्री इन्दिरा की स्मृति में किए गए भावपूर्ण महादान का यह विश्वविद्यालय मूर्त परिणाम है। यह वि.वि. संगीतकला, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला तथा काव्यकला इन ललितकलाओं का अध्ययन केन्द्र है। वर्ष 2014 में NAAC द्वारा प्रत्यायित A Greade प्राप्त यह वि.वि. प्रगति के नित नए आयाम प्राप्त कर रहा है।

कला संकाय इ.क.सं. वि. खैरागढ़ के अन्तर्गत संस्कृत विभाग स्थापित है। 1971 में स्थापित यह संस्कृत विभाग संस्कृत-साहित्य एवं ललितकलाओं के अन्तरानुशासनात्मक सम्बन्ध का प्रतिबिम्ब है। यहां स्नातक स्तर पर बी.ए. तथा बी.पी.ए. में साहित्य तथा भाषा का अध्यापन एवं विभाग के शोधार्थियों को वि.वि. द्वारा पी.एच.डी. उपाधि प्रदान की जाती है।

खैरागढ़ से निकटतम रेल्वे स्टेशन द.पू.मुम्बई-हावडा मार्ग पर स्थित राजनांदगांव,डोंगरगढ़ एवं दुर्ग क्रमशः 40, 42 एवं 55 कि.मी. दूर है।

चर्चा हेतु बिन्दु-

1. 20वीं-21वीं शताब्दी के महाकाव्यों का संगीत से अन्तःसंबंध।
2. महाकाव्यों का दृश्यकलाओं से अन्तःसंबंध।
3. आधुनिक संस्कृत नाटकों में कलात्मक दृष्टि एवं रंगमंचीयता।
4. संस्कृत गीतों एवं गजलों की परम्परा एक दृष्टि।
5. संस्कृतपत्रकारिता एवं कलात्मक दृष्टि।
6. समीक्षात्मक साहित्य में कलात्मक दृष्टि।
7. वर्तमान साहित्य पर प्राच्य साहित्य का कलात्मक प्रभाव।
8. 20वीं-21वीं शताब्दी के संस्कृत साहित्यकारों का कलात्मक रचना संसार- एक विमर्श।

विशेष- इन विषयों पर 3000 शब्दों में और कृतिदेव 16 तथा साईज 14 में ही शोध-लेख अपेक्षित हैं। पूर्ण शोध पत्र ही स्वीकार्य है। शोध पत्र प्रेषित करने की अन्तिम तिथि दिनांक 10/2/2019 होगी।